International Journal of Social Science and Humanities
www.humanitiesjournals.com
Online ISSN: 2664-8628 Print ISSN: 2664-861X
Received: 20-07-2025, Accepted: 19-08-2025, Published: 04-09-2025
Volume 7, Issue 5, 2025, Page No. 5-9

भारत के एकीकरण में सरदार वल्लभ भाई पटेल का योगदान

सर्वेश कुमार पांडेय
शोध छात्र, JRF, मध्यकालीन एवं आधुनिक भारतीय इतिहास विभाग, हिन्दू पी. जी. कॉलेज, जमानिया, गाज़ीपुर, भारत

सारांश
सरदार वल्लभभाई पटेल ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और स्वतंत्रता के बाद 565 से अधिक देशी रियासतों को भारतीय संघ में एकीकृत करने में ऐतिहासिक योगदान दिया। उन्होंने भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) के निर्माण में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई जिसे उन्होंने देश की स्थिरता और विकास की रीढ़ माना, और इसे 'स्टील फ्रेम' कहा। पटेल का नमन यह था कि एक मजबूत प्रशासनिक तंत्र के बिना देश की अखंडता और लोकतंत्र सुरक्षित नहीं रह सकता। उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि भारतीय सिविल सेवा भारतीय नियंत्रण में हो, जिसे आधुनिक भारत के प्रशासन का मुख्य आधार माना जाता है।
साथ ही, उन्होंने राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा दिया और देश की विविधता के बावजूद समरसता और अखंडता को बनाये रखने का प्रयास किया। पटेल ने विवादित रियासतों के शांतिपूर्ण विलय के लिए कूटनीतिक रणनीति, संवाद और आवश्यकतानुसार सैन्य दखल देने की नीति अपनाई। उनके दृढ़ नेतृत्व एवं दूरदर्शिता की वजह से भारत का एकीकृत स्वरूप बना और देश को स्थिरता मिली।
पटेल का योगदान आज भी अत्यंत प्रासंगिक है, वह भारत के राष्ट्र निर्माता और 'लौह पुरुष' के रूप में सदैव याद रखे जाएंगे। उनकी विरासत भारतीय प्रशासनिक सेवा और राष्ट्रीय एकता के क्षेत्र में अभी भी प्रेरणा स्रोत बनी हुई है, जो भारत को मजबूत और अखंड बनाए रखने में सहायक है।

मुख्य शब्दः सरदार पटेल, भारत का एकीकरण, स्वतंत्रता संग्राम, देशी रियासतें, भारतीय संघ, भारतीय प्रशासनिक सेवा

भारत के एकीकरण की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि अत्यंत जटिल और विविधतापूर्ण रही है। स्वतंत्रता प्राप्ति के समय भारत लगभग 565 देशी रियासतों, विभिन्न प्रान्तों, भाषाओं, धर्मों और सांस्कृतिक विविधताओं का समूह था। इन रियासतों में से कई ब्रिटिश शासन के अधीन न होकर स्वतंत्र रूप से या ब्रिटिश संधि के तहत शासित होती थीं। ऐसे में सम्पूर्ण देश को एकसूत्र में पिरोना एक अत्यंत चुनौतीपूर्ण कार्य था। अंग्रेजों की 'फूट डालो और राज करो' नीति के कारण समाज में क्षेत्रीयता, भाषायी तथा सांप्रदायिक भेदभाव गहराया था, जिससे देश को राजनीतिक तथा प्रशासनिक रूप से एकीकृत करना आवश्यक हो गया था।
स्वतंत्रता के समय देश की स्थिति अत्यधिक संवेदनशील थी। एक ओर विभाजन का दर्द था, दूसरी ओर अलग–अलग रियासतों की स्वायत्तता की जिद, पाकिस्तान का भय और शरणार्थी संकट जैसी समस्याएँ थीं। इस चुनौतीपूर्ण समय में मजबूत और व्यवहारिक नेतृत्व की आवश्यकता थी। ऐसे समय में सरदार वल्लभभाई पटेल का नेतृत्व देश के लिए संजीवनी बना। उन्होंने दूरदृष्टि, कूटनीति, समझौता और कहीं–कहीं पितउदमे के मिश्रण से इन समस्याओं का समाधान निकाला और देश के सभी राज्यों और रियासतों को भारतीय संघ में सम्मिलित किया।
सरदार पटेल को आधुनिक भारत के निर्माण का शिल्पकार और "लौह पुरुष" कहा जाता है। वे न केवल भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के अग्रणी नेता थे, बल्कि उनके प्रयासों से राष्ट्रीय एकता का मार्ग भी प्रशस्त हुआ। उनकी धैर्यशीलता, दृढ़ता और संगठन क्षमता ने भारत की एकता एवं अखंडता को मजबूती प्रदान की। उनकी विरासत आज भी प्रत्येक भारतीय के लिए प्रेरणा है, और उनके जन्म दिवस "राष्ट्रीय एकता दिवस" के रूप में मनाकर भारत उनके योगदान को स्मरण करता है।

सरदार पटेल का जीवन एवं व्यक्तित्व

सरदार वल्लभभाई पटेल का जीवन एक साधारण किसान परिवार में जन्मे बालक से भारत के लौह पुरुष बनने तक की प्रेरणादायक यात्रा है। उनका जन्म 31 अक्टूबर 1875 को गुजरात के नडियाद गांव में हुआ था। उनके पिता झावेरभाई पटेल एक किसान और झांसी की रानी की सेना में सेवा देने वाले देशभक्त थे, जबकि माता लाडबा देवी धार्मिक और सहनशील थीं। पटेल जी बचपन से ही कठोर परिश्रमी, आत्मनिर्भर और न्यायप्रिय थे। उन्होंने प्राथमिक शिक्षा अपने गाँव में पूरी की और आगे की पढ़ाई के लिए इंग्लैंड गए, जहाँ से उन्होंने बैरिस्टर की डिग्री प्राप्त की। इंग्लैंड में अध्ययन के दौरान उनकी मेहनत और प्रतिबद्धता के कई किस्से आज भी लोगों को प्रेरित करते हैं।
भारत लौटकर पटेल ने अहमदाबाद में वकालत शुरू की। जीवन के कठिनतम क्षण में, जब उनकी पत्नी का देहांत हुआ, वे निस्वार्थ भाव से कर्तव्य के प्रति समर्पित रहे। वकालत में सफल होने के बावजूद उन्होंने देश की स्वाधीनता के लिए अपने व्यक्तिगत सुख–स्वार्थ को त्याग दिया। महात्मा गांधी से प्रेरित होकर पटेल ने 1918 के खेड़ा सत्याग्रह में सक्रिय भूमिका निभाई, जहां उन्होंने किसानों के लिए कर छूट दिलवाने हेतु आंदोलन किया। 1928 के बारडोली सत्याग्रह के दौरान उनके नेतृत्व, संगठन क्षमता और दृढ़ता ने अंग्रेज सरकार को झुकने के लिए विवश कर दिया। इसी आंदोलन की सफलता पर उन्हें श्सरदारश की उपाधि दी गई।
भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में पटेल ने असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन, नमक सत्याग्रह और भारत छोड़ो आंदोलन में अग्रणी भूमिका निभाई। इन आन्दोलनों में नेतृत्व और कांग्रेस की अध्यक्षता करते हुए वे अक्सर जेल भी गए। श्री पटेल का मानना था कि सतत संघर्ष और संगठन शक्ति से ही स्वतंत्रता प्राप्त की जा सकती है।
स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद पटेल देश के पहले गृह मंत्री और उपप्रधानमंत्री बने। उनको सबसे बड़ी चुनौती थी – 565 देशी रियासतों का भारतीय संघ में शांतिपूर्ण तरीके से एकीकरण। अपनी कूटनीति, संवाद कौशल, दृढ़ता और प्रशासनिक समझ से उन्होंने बिना व्यापक हिंसा के लगभग सभी रियासतों को भारत में शामिल करने का ऐतिहासिक कार्य किया। तीन जटिल रियासतों – हैदराबाद, जूनागढ़ और कश्मीर – को भी उन्होंने सशस्त्र या कूटनीतिक उपायों से भारतीय संघ में मिलाया। प्रशासनिक दृष्टि

से उन्होंने भारतीय प्रशासनिक सेवा (IAS) की नींव रखी और अखिल भारतीय सेवाओं की स्थापना कर देश के प्रशासनिक ढांचे को मजबूत किया। इस योगदान के लिए उन्हें श्भारतीय सिविल सेवकों का संरक्षक संतश कहा जाता है।

सरदार पटेल का व्यक्तित्व दृढ़, न्यायप्रिय, अनुशासनबद्ध, त्यागी और दूरदर्शी था। वे भारत की एकता, अखंडता और प्रगति के सच्चे शिल्पकार थे। उनकी प्रेरणा से आज भी देश में राष्ट्रीय एकता, संगठन और कर्तव्यनिष्ठा की भावना बनी हुई है। उनके जीवन और व्यक्तित्व से प्रेरणा लेकर प्रत्येक भारतीय अपने राष्ट्र के प्रति समर्पित रहने का संदेश पा सकता है।

देशी रियासतों की समस्या

स्वतंत्रता प्राप्ति के समय भारत की राजनीतिक संरचना अत्यंत जटिल थी, जिसमें ब्रिटिश सरकार के अधीन सीधे शासित प्रांतों के अतिरिक्त लगभग 565 देशी रियासतें भी थीं। ये रियासतें भारत के लगभग 48ः भूभाग और 28ः जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करती थीं। रियासतें आंतरिक रूप से अपने–अपने शासकों द्वारा स्वशासित थीं, लेकिन सुरक्षा, विदेश नीति तथा संचार के मामलों में ये ब्रिटिश साम्राज्य के तहत् थीं। भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम, 1947 के अनुसार, स्वतंत्रता के बाद इन रियासतों को तीन विकल्प दिए गएकृभारत में विलय, पाकिस्तान में शामिल होना या एक स्वतंत्र संप्रभु राज्य बने रहना।

इन देशी रियासतों की स्थिति स्वतंत्रता के बाद राष्ट्रीय एकता और अखंडता के लिए बहुत बड़ी चुनौती बनी रही। अधिकांश रियासतों के शासक अपने–अपने क्षेत्रों की स्वतंत्रता या विशेषाधिकारों को बनाए रखने के इच्छुक थे। कुछ रियासत जैसे हैदराबाद, जूनागढ़, कश्मीर, भोपाल और त्रावणकोर स्वतंत्रता की घोषणा के प्रयास में लगे थे या पाकिस्तान में जाने की इच्छा जता रहे थे। इन परिस्थितियों में अलग–अलग राजनीतिक और प्रशासनिक संरचनाओं का बना रहना देश की एकता, सुरक्षा और विकास के लिए निरंतर खतरा था।

मुख्य चुनौतियाँ थीं—(1) विभिन्न रियासतों के क्षेत्रफल, संस्कृति, भाषा एवं राजनीति में असमानता; (2) कुछ रियासतों द्वारा स्वतंत्र या पाकिस्तान में शामिल होने की चाह; (3) अगर ये रियासतें चाहें तो देश में अराजकता, अस्थिरता और बाहरी ताकतों के लिए हस्तक्षेप का खतरा बना रहता। एकीकृत प्रशासनिक प्रणाली के अभाव में शांति व विकास बाधित होता।

इन चुनौतियों को देखते हुए, सरदार वल्लभभाई पटेल, तत्कालीन गृहमंत्री और उपप्रधानमंत्री, ने रियासतों के एकीकरण को सर्वोपरि राष्ट्रहित मानते हुए व्यापक रणनीति बनाई। व्यापारिक, सांस्कृतिक और भौगोलिक संबंधों के विश्लेषण के आधार पर उन्होंने "विलय पत्र (इंस्ट्रूमेंट ऑफ एक्सेशन) तैयार करवाया, जिस पर हस्ताक्षर करने से रियासतें भारतीय संघ का अंग बन जाती थीं। जहां संवाद और समन्वय से बात नहीं बनी, वहां दृढ़ता और आवश्यकतानुसार सैन्य विकल्प (जैसे हैदराबाद में 'ऑपरेशन पोलो) का भी उपयोग किया गया।

नव स्वतंत्र भारत के लिए एकीकरण की आवश्यकता इसलिए और महत्वपूर्ण थी क्योंकि विभाजित एवं अस्थिर राष्ट्र न केवल सामाजिक और अर्थव्यवस्था के लिए घातक साबित हो सकता था, बल्कि विदेशी ताकतों के हस्तक्षेप का भी कारण बन सकता था। एकीकरण के बिना देश में नागरिक अधिकार, प्रशासनिक समानता और आर्थिक प्रगति संभव नहीं थी।

अंत में, देशी रियासतों के एकीकरण ने भारत को अखंडता, स्थिरता और सशक्त प्रशासनिक तंत्र प्रदान किया, जिससे आधुनिक भारत की नींव मजबूत हुई और आगे सामाजिकदृ आर्थिक विकास का मार्ग प्रशस्त हुआ।

रियासतों के एकीकरण की प्रक्रिया

स्वतंत्रता के बाद रियासतों के एकीकरण की प्रक्रिया भारतीय इतिहास की सबसे बड़ी और निर्णायक उपलब्धियों में गिनी जाती है। सरदार वल्लभभाई पटेल, तत्कालीन गृहमंत्री और उपप्रधानमंत्री, ने वी.पी. मेनन के तेज़ सहयोग से इस विशाल कार्य में सफलता पाई। उनके द्वारा अपनाई गई प्रक्रिया को संधियों, कूटनीति और दबाव की रणनीति के समावेश के रूप में देखा जा सकता है।

संधियों और कानूनी उपकरण

रियासतों के भारत में विलय की आधारशिला श्इंस्ट्रूमेंट ऑफ एक्सेशन' (विलय पत्र) थी। अंग्रेजों की सत्ता के अंत के साथ ही, प्रत्येक रियासत को तीन विकल्प मिलेकृ भारत में विलय, पाकिस्तान में विलय, या स्वतंत्र रहना। पटेल ने स्पष्ट और तेज़ी से संदेश दिया कि भारतीय संघ में सम्मिलित होना ही न सिर्फ राष्ट्रहित में है, बल्कि उनके लिए भी सुरक्षित है। इसके लिए कानूनी रूप से श्विलय पत्रश तैयार करवाया गया, जिस पर रियासतों के शासकों के हस्ताक्षर से वह भारतीय संघ का भाग बन जाती थी। विलय पत्र में रक्षा, विदेश मामले और संचार जैसे महत्त्वपूर्ण विषय केंद्र के अधीन होते। बाकी विषयों में पहले कई रियासतों को स्वायत्तता दी गई, जिससे वे सम्मिलन के लिए तैयार हो सकें।

कूटनीतिक कौशल और संवाद

पटेल ने अपनी कूटनीति से रियासतों के शासकों को यह विश्वास दिलाया कि उनके सम्मान, संपत्ति, विशेषाधिकार और भविष्य की सुरक्षा को खतरा नहीं होगा, बल्कि यह भारतीय संघ में उनके लिए अधिक लाभकारी होगा। उन्होंने कई रियासतों को विशेष आर्थिक या प्रशासनिक सहूलियतें भी दीं, जैसे जोधपुर, भोपाल, कश्मीर आदि। पटेल की टीम ने हर शासक की आवश्यकताओं, आकांक्षाओं और शंकाओं का बड़ी सूझ–बूझ से निराकरण किया। राजस्थान की दर्जनों रियासतों को एकीकृत करने में भी पटेल–वी.पी. मेनन युगल की यही रणनीति सफल रही।

जन–दबाव एवं नागरिक आंदोलन

कई स्थानों पर जनता का स्वतःस्फूर्त आंदोलन भी शुरू हुआ, जिससे शासकों पर जनता की आवाज़ मानने का दबाव बना। जूनागढ़ में नवाब के पाकिस्तान में विलय के प्रयास के खिलाफ स्थानीय जनजन ने विद्रोह किया। पटेल ने इसका समर्थन कर वहां सेना भेजी और जनमत संग्रह कराया, जिसमें बहुमत भारत के पक्ष में था।

दबाव, चेतावनी, और कठोरता

जहां कूटनीति या संवाद से काम नहीं बना, वहां पटेल ने कठोर कदम भी उठाए। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि भारत के भीतर पृथक–स्वायत्तता स्वीकार्य नहीं होगीरू "यदि आप विलय नहीं करोगे तो स्वतः आपकी जनता को नियंत्रित करना कठिन हो जाएगा, और 15 अगस्त के बाद हमारी शर्तें और कड़ी होती जाएंगी"। हैदराबाद रियासत के निजाम ने स्वतंत्रता की घोषणा और रजाकारों द्वारा हिंसा आरंभ कर दी। पटेल ने 'ऑपरेशन पोलो' के तहत सैन्य कार्रवाई कर हैदराबाद को भारतीय संघ में मिला लिया। इसी तरह, कश्मीर के राजा की पाकिस्तानियों द्वारा

सहायता मांगे जाने की स्थिति में, जन विद्रोह और सैन्य हस्तक्षेप के मिश्रण से राज्य का विलय हुआ।

राज्यों का समुच्चयन और पुनर्गठन

पटेल ने महज़ एकीकरण नहीं, बल्कि प्रशासकीय दक्षता के लिए भी कई छोटी रियासतों का समुच्चयन (ग्रुपिंग) करवाया, जैसे राजस्थान का संयुक्तराष्ट्र, सौराष्ट्र, मध्य भारत आदि[। इससे प्रशासनिक सुविधा और व्यावहारिकता बढ़ी तथा आगे चलकर राज्यों के भाषाई आधार पर पुनर्गठन का मार्ग खुला।

इस संपूर्ण प्रक्रिया में पटेल ने कहीं संवाद, कहीं प्रोत्साहन–प्रलोभन, कहीं जनता के आंदोलन, तो कहीं सैन्य दबावकृहर तरीका अपनाया। उनकी कुशल, व्यवहारिक और दूरदर्शी नीति के कारण, 565 में से 562 रियासतें 15 अगस्त 1947 तक या थोड़े समय बाद भारतीय संघ में शामिल हो चुकी थीं। इस दूरदर्शिता, इच्छाशक्ति और प्रशासनिक नीति के कारण ही सरदार पटेल को भारत के श्लौह पुरुष' और श्एकीकरणकर्ता' के रूप में हमेशा याद किया जाएगा, और आधुनिक भारत की अखंडता एवं स्थिरता का श्रेय बहुत हद तक उनके इन्हीं प्रयासों को जाता है।

प्रमुख रियासतों का विलय

स्वतंत्रता के समय भारत में लगभग 565 देशी रियासतें थीं, जिनमें से तीन महत्वपूर्ण रियासतेंकृहैदराबाद, जूनागढ़ और जम्मू–कश्मीरकृअपने विलय को लेकर विवादास्पद स्थिति में थीं। इन्हीं रियासतों का विलय भारतीय एकीकरण की प्रक्रिया में विशेष रूप से उल्लेखनीय रहा है। इन रियासतों की केस स्टडी से एकीकरण की जटिलता और सरदार वल्लभभाई पटेल के नेतृत्व की सफलता स्पष्ट होती है।

हैदराबाद का विलय

हैदराबाद भारतीय उपमहाद्वीप की सबसे अमीर और शक्तिशाली देशी रियासत थी। निजाम मीर उस्मान अली खान को ब्रिटिश समर्थन प्राप्त था और उनकी सेना, रेल एवं डाक व्यवस्था थी। 15 अगस्त 1947 के बाद निजाम ने स्वतंत्रता की घोषणा कर हैदराबाद को स्वतंत्र राज्य घोषित कर दिया और भारत में विलय से इनकार कर दिया। निजाम की इस स्थिति से क्षेत्र में राजनीतिक अस्थिरता फैल गई। निजाम ने पाकिस्तान के साथ अनौपचारिक संबंध बनाए और रजाकार नामक दक्षिणपंथी मुस्लिम मिलिशिया बनाई, जिसने हिंदू आबादी के खिलाफ हिंसा की।

सरदार पटेल ने हैदराबाद को भारत में विलय कराने के लिए अनेक कूटनीतिक प्रयास किए, किन्तु जब निजाम ने साफ ईन्कार किया, तो भारत सरकार ने सितंबर 1948 में 'ऑपरेशन पोलो' नामक सैन्य कार्रवाई शुरू की। भारतीय सेना ने पाँच दिन में निजाम की सेना को हराकर हैदराबाद को भारतीय संघ में मिला दिया। 17 सितंबर 1948 को यह आधिकारिक तौर पर भारत का हिस्सा बन गया। इसके बाद हैदराबाद में लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं को स्थापित किया गया और निजाम ने भारत के संविधान को अपनाने की घोषणा की।

जूनागढ़ का विलय

जूनागढ़ की रियासत पेश्नागत मुस्लिम शासक, नवाब अहमदाबाद का क्षेत्र था जिसे भारत में विलय के बजाय पाकिस्तान में शामिल होने का निर्णय लिया। हालांकि, अधिकांश आबादी हिंदू थी और वे भारत के साथ रहना चाहते थे। यह निर्णय जूनागढ़ में अशांति और विरोध पैदा कर गया। भारत सरकार ने जूनागढ़ पर शासन स्थापित करने के लिए सैन्य और प्रशासनिक उपाय अपनाए। नवाब ने पाकिस्तान भागने का निर्णय लिया। अंततः जूनागढ़ 20 फरवरी 1948 को भारतीय संघ में विलय हो गया। जूनागढ़ में जनमत संग्रह कर यह पुष्टि कराई गई कि अधिकांश जनता का समर्थन भारत में विलय का था।

जम्मू–कश्मीर का विलय

जम्मू–कश्मीर प्रायद्वीपीय क्षेत्र था जिसमें हिंदू, मुस्लिम और बौद्ध आबादी शामिल थी। राजा हरि सिंह ने स्वतंत्र रहने की इच्छा जताई, लेकिन पाकिस्तान ने कश्मीर के कुछ हिस्सों को हथियारबंद मुजाहिदीन भेजकर कब्जा करने की कोशिश की। 26 अक्टूबर 1947 को राजा हरि सिंह ने भारत से सैनिक सहायता मांगी और भारतीय सेना के समक्ष विलय पत्र पर हस्ताक्षर किया। इस निर्णय के बाद कश्मीर भारत में शामिल हुआ। हालांकि, इस क्षेत्र पर विवाद उत्पन्न हो गया, जिसने भारत–पाकिस्तान के बीच कई युद्धों का कारण बना।

इन तीनों रियासतों का विलय भारतीय इतिहास में विभाजन और स्वतंत्रता के बाद लोकमान्यता और राष्ट्रीय एकता की दिशा में महत्वपूर्ण कदम था। जहां एक ओर जूनागढ़ और जम्मू–कश्मीर में राजनीतिक और सैन्य समझौते एवं जनमत संग्रह की मदद से विलय हुआ, वहीं हैदराबाद का विलय सैन्य कार्रवाई के माध्यम से संभव हुआ। सरदार पटेल और उनकी टीम की कूटनीति, दबाव तथा आवश्यकतानुसार सैन्य हस्तक्षेप की रणनीति ने भारतीय संघ को अखंड रखने में अहम भूमिका निभाई। इनके सफल विलय ने आधुनिक भारत की क्षेत्रीय अखंडता सुनिश्चित की और केंद्र सरकार के मजबूत पुनर्निर्माण की नींव रखी। यह अनुभव आज भी भारत के लिए राष्ट्र एकता की मिसाल है।

प्रशासनिक सुधार एवं भारतीय प्रशासनिक सेवा

सरदार वल्लभभाई पटेल ने भारत के स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद एकीकृत भारत के लिए प्रशासनिक व्यवस्था की स्थापना में एक अपरिहार्य भूमिका निभाई। उन्हें भारत की सिविल सेवा को शासन का "स्टील फ्रेम" कहकर संबोधित करने के लिए याद किया जाता है, जो देश की शक्ति और स्थिरता का आधार है। उनके विचार और प्रयास भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) के निर्माण एवं विकास से जुड़े हैं, जिसने नव स्वतंत्र भारत के प्रशासनिक तंत्र को मजबूती प्रदान की।

स्वतंत्रता के समय भारत में ब्रिटिश द्वारा स्थापित इंडियन सिविल सर्विस (आईसीएस) नामक प्रशासनिक ढांचा था, जिसे भारतीय नेतृत्व के अभाव के कारण संदेह की नजर से देखा जाता था। सरदार पटेल ने इस सेवा को समाप्त करने के बजाय इसके भारतीयकरण और संवर्धन की वकालत की ताकि देश के प्रशासनिक ढांचे में निरंतरता बनी रहे। उन्होंने कांग्रेस के अन्य नेताओं, विशेषकर जवाहरलाल नेहरू को भी इस बात के लिए मनाया कि आईसीएस को पूरी तरह से खत्म कर देने की बजाय भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) में उसका कायाकल्प किया जाए और इसे भारतीय नियंत्रण में लाया जाए। इस बदलाव से प्रशासनिक कार्यों की समुचित पारदर्शिता और दक्षता बनी रही।

पटेल ने भारतीय प्रशासनिक सेवा को देश की रीढ़ माना, जिसने नए भारत के विशाल और विविध क्षेत्र को सशक्त और कुशल शासन तंत्र से जोड़ा। 21 अप्रैल 1947 को पटेल ने आईएएस के पहले समूह को संबोधित करते हुए कहा था कि वे भारतीय प्रशासन के अग्रणी हैं और देश के भविष्य का निर्माण उनके चरित्र, कार्य और सेवा भावना पर निर्भर करेगा। उन्होंने आईएएस अधिकारियों को अधिक स्वतंत्रता और जिम्मेदारी दी, जिससे वे देश की सेवा मनोभाव के साथ कर सकें। पटेल का मानना था कि प्रशासनिक तंत्र का मजबूत होना राष्ट्र की अखंडता और विकास के लिए आवश्यक है।

उनका प्रशासनिक सुधारों का विजन था कि भारतीय राज्य की प्रशासनिक मशीनरी इतनी सक्षम और मजबूत हो कि वह स्वतंत्र रूप से अपने कार्यों को निष्पादित कर सके और बाहरी दबावों के

प्रति स्थिर बनी रहे। उन्होंने आईसीएस को भारतीय नियंत्रण में लेकर उसे भारतीय संविधान और शासन व्यवस्था के अनुरूप ढालने का मार्ग प्रशस्त किया। इसके तहत आईसीएस को भारतीय प्रशासनिक सेवा (IAS) और इंडियन पुलिस सेवा (IPS) में विकसित किया गया।

सरदार पटेल के प्रशासनिक सुधार न केवल प्रचालनात्मक दक्षता को बढ़ावा देते थे, बल्कि उन्होंने इसमें नैतिकता, ईमानदारी और देशभक्ति के भाव भी जोड़े। उन्होंने सेवा के प्रति उच्च मानक निर्धारित किए, जिससे शासन तंत्र में विश्वास बढ़ा और सार्वजनिक प्रशासन की गुणवत्ता सुधरी। उनकी दूरदर्शिता ने सुनिश्चित किया कि प्रशासनिक सेवा भारतीय लोकतंत्र के अनुकूल और संवैधानिक सिद्धांतों के अनुरूप काम करे।

इसके अतिरिक्त, पटेल ने रियासतों के एकीकरण के बाद नए राज्य बनाने और उनके प्रशासनिक पुनर्गठन में सक्रिय भागीदारी निभाई। उन्होंने प्रांतीय एवं राज्य स्तरीय प्रशासन में शक्तियों का समुचित वितरण किया और राज्यपाल, प्रशासक जैसे पदों की सीमित शक्तियों का प्रावधान किया ताकि लोकतांत्रिक शासन सही ढंग से स्थापित हो सके। उन्होंने अल्पसंख्यकों, जनजातियों और बहिष्कृत वर्गों के अधिकारों की सुरक्षा के लिए भी विशेष समितियां बनाई और उनके लिए न्यायपूर्ण प्रशासन व्यवस्था सुनिश्चित की।

सरदार पटेल के इन प्रयासों से भारत का प्रशासनिक तंत्र आज भी देश के विकास और एकता का मुख्य आधार है। उन्होंने प्रशासन को भारत के स्टील फ्रेम के रूप में देखा, जो भू–राजनीतिक अस्थिरता के बीच देश को स्थिरता और मजबूती प्रदान करता है। उनकी यह दृष्टि भारतीय प्रशासनिक सेवा को एक विश्वसनीय, सक्षम और लोकतांत्रिक संस्थान के रूप में स्थापित कर गई, जो आज भी भारत के प्रशासनिक ढांचे की रीढ़ बनी हुई है।

स्वतंत्र भारत में राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा

सरदार वल्लभभाई पटेल को भारत की राष्ट्रीय एकता और अखंडता के सर्वोत्तम संरक्षक के रूप में जाना जाता है। उन्होंने स्वतंत्र भारत के निर्माण के दौरान अनेक चुनौतियों और जटिलताओं के बीच अपने नेतृत्व और दृढ़ संकल्प से देश की सांस्कृतिक, सामाजिक और भौगोलिक अखंडता को सुदृढ़ किया। उनके प्रयासों ने भारत को एक अनेकताओं वाले राष्ट्र होते हुए भी एक सूत्र में बांधा, जो आज भी उनकी महान उपलब्धि के रूप में स्वागत है।

राष्ट्रीय एकता के प्रति सरदार पटेल का दृष्टिकोण क्रांतिकारी था। वे मानते थे कि भारत की विविधता में एकता ही उसकी सबसे बड़ी ताकत है। वे यह समझते थे कि जाति, धर्म, भाषा और क्षेत्रीय भेदभाव के बावजूद भारतवासियों को एक साझा राष्ट्रीय भावना से जोड़ना आवश्यक है। इस लक्ष्य के लिए उन्होंने देश के विभाजन और अस्थिरता के दौर में रियासतों के एकीकरण पर विशेष ध्यान दिया, जिससे भारत का भू–राजनीतिक एकीकरण सुनिश्चित हो सके। हैदराबाद, जूनागढ़, जम्मू–कश्मीर जैसी विवादास्पद रियासतों का विलय बहुलता में एकता का प्रतीक बना, जिसका श्रेय मुख्य रूप से उनके नेतृत्व को जाता है।

उन्होंने यह भी सुनिश्चित किया कि भारतीय संघ का कोई भी भाग स्वतंत्रता के बाद अलगाववादी या अलग राज्य के रूप में दिखाई न दे, जिससे देश की अखंडता मजबूत बनी रहे। इसके लिए उन्होंने न केवल राजनैतिक और कूटनीतिक कौशल का उपयोग किया, बल्कि जहाँ आवश्यकता हुई, सैन्य हस्तक्षेप के विकल्प भी अपनाए। उनके ये कदम भारत के लोकतांत्रिक अस्मिताओं और क्षेत्रीय अखंडता दोनों की सुरक्षा में सहायक साबित हुए। उनका मानना था कि देश की रक्षा और उसकी अखंडता सभी नागरिकों की सर्वोच्च जिम्मेदारी है।

सांस्कृतिक अखंडता को बढ़ावा देने के लिए पटेल ने विभिन्न भाषाओं, धर्मों और जातियों के बीच सहिष्णुता और सौहार्द को बढ़ावा दिया। वे भारतीय संविधान के विचारकों में से एक थे, जिन्होंने एक ऐसा संविधान तैयार किया जो विविधतापूर्ण भारत में सभी समुदायों को समान अधिकार और सुरक्षा प्रदान करता है। उनकी सोच "वसुधैव कुटुंबकम" के सिद्धांत पर आधारित थी, जो विश्व को एक परिवार के रूप में देखने का दृष्टिकोण था।

सरदार पटेल ने स्वतंत्र भारत की राजनीतिक एकता के साथ–साथ सामाजिक और आर्थिक समरसता को भी राष्ट्रीय एकता का अभिन्न हिस्सा माना। उन्होंने महिलाओं, दलितों और विभाजित समाज के पिछड़े वर्गों की भागीदारी को बढ़ावा दिया, ताकि एक न्यायसंगत और समृद्ध समाज का निर्माण हो सके। उन्होंने भारतीय लोकतंत्र की मजबूती और स्थिरता के लिए एक सुव्यवस्थित प्रशासनिक तंत्र के निर्माण में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिससे राष्ट्रीय एकता को व्यवहारिक रूप भी मिला।

निष्कर्ष

सरदार वल्लभभाई पटेल ने स्वतंत्र भारत के राजनीतिक एकीकरण में अतुलनीय योगदान दिया। 1947 में जब भारत को स्वतंत्रता मिली, उस समय देश कई छोटे–छोटे रियासतों और राज्यों में बटा हुआ था, जिनका भारत में विलय करना एक बड़ी चुनौती थी। पटेल ने अपनी दूरदर्शिता, कूटनीति, समझदारी और दृढ़ निश्चय से लगभग 565 रियासतों को भारतीय संघ में शामिल कराकर भारत को एक अखंड राष्ट्र के रूप में स्थापित किया। उनका यह कार्य भारत की भौगोलिक एवं सांस्कृतिक अखंडता की नींव बना।

सरदार पटेल का मूल्यांकन केवल एक कुशल प्रशासक के रूप में नहीं, बल्कि एक राष्ट्रीय एकता के सशक्त स्तंभ के रूप में किया जाता है। उन्होंने दिखाया कि कैसे विभिन्न भाषाओं, धर्मों और संस्कृतियों वाले लोगों के समूह को एक साझा राष्ट्रीय भावना में बदलना संभव है। आज भी भारत की विविधता में एकता उनकी दूरदर्शी सोच और कृतित्व का परिणाम है। उनके योगदान की प्रासंगिकता वर्तमान समय में और भी अधिक है, जब वैश्वीकरण और स्थानीयता के बीच संतुलन बनाए रखना आवश्यक है। सरदार पटेल के सिद्धांत राष्ट्रवादी और अखंड भारत के निर्माण के लिए आज भी मार्गदर्शक है।

उनकी विरासत को सम्मान देने के लिए भारत सरकार ने उनकी जयंती, 31 अक्टूबर को राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मनाना शुरू किया है। इसके अतिरिक्त केवडिया में उनकी विशाल प्रतिमा, 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी, भारत की एकता का प्रतीक बन चुकी है। इस प्रकार, सरदार पटेल की भूमिका न केवल इतिहास में महत्वपूर्ण है, बल्कि वे आज भी भारतीय जनता के लिए एक प्रेरणा स्रोत हैं, जो राष्ट्रीय एकता और अखंडता के प्रति उनके समर्पण को दर्शाता है।

संदर्भ सूची

1. राष्ट्रीय एकता दिवसरू भारत संघ के वास्तुकार सरदार पटेल की याद में https://www-visionias-in/blog&hindi/hindi/raassttriiy&ektaa&divs&bhaart&sngh&ke&vaastukaar&srdaar&pttel&kii&yaad&men
2. राष्ट्रीय एकता के सूत्रधार सरदार बल्लभ भाई पटेल – Amar Ujala https://www-amarujala-com/columns/blog/national&unity&day&2024&know&the&interesting&facts&and&biography&of&sardar&vallabhbhai&patel–2024–10–31

3. सरदार वल्लभभाई पटेल, जीवनी, योगदान, मृत्यु – Vajiram & Ravi https://translate-google-com/translate\u¾https%3A%2F%2Fvajiramandravi-com%2Fupsc&eÛam%2Fsardar&vallabhbhai&patel%2F&hl=hi&sl=en&tl=hi&client=srp
4. भारत के एकीकरण में सरदार वल्लभभाई पटेल का योगदान https://zenodo-org/records/13335493/files/34-pdf\download=1
5. राष्ट्रवादी विचार और भारतीय एकताः सरदार वल्लभ भाई पटेल के https://www-socialsciencejournal-in/assets/archives/2023/vol9issue4/9109&1691566324215-pdf
6. सरदार पटेल/150 रू कैसे देश के पहले गृह मंत्री वल्लभभाई ने https://hindi-news18-com/news/knowledge/sardar&patel150&how&he&save–ics–who–later–became–india–administrative–services–ias–backbone–of–country–8806227-html
7. सरदार वल्लभभाई पटेल एक एकीकृत सिविल सेवा के मुखर प्रवक्ता थे https://www-jagran-com/editorial/apnibaat–rashtriya–ekta–diwas–sardar–vallabhbhai–patel–was–a–vocal–spokesperson–for–a–unified–civil–service–jagran–special–20991398-html
8. हैदराबाद का विलयरू मुक्ति या राजतंत्र से लोकतंत्र की ओर यात्रा? https://www-satyahindi-com/truth–from–history/merger–of–hyderabad&liberation–or–a–journey–from–monarchy–to–democracy–141621-html
9. हैदराबाद रियासत का भारत में विलय हुआ था या एकीकरण? https://www-bbc-com/hindi/india–49733788
10. स्वतंत्रता के पश्चात देशी राज्यों (रियासतों) का एकीकरण https://www-drishtiias com/hindi/paper1/integration–of–princely–states–after–independence